मुंशी प्रेमचंद के नाटक

कर्बला का उद्देश्य

डॉ. राजेन्द्र सिंह

आचार्य, हिन्दी विभाग

Email : rajendersingh@mgcub.ac.in

महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय

मोतिहारी, बिहार

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा छठा सेमेस्टर

पाठ्यक्रम : प्रेमचंद HIND 3026

मुंशी प्रेमचंद का जीवनकाल

31 जुलाई 1880 - 8 अक्तूबर 1936

- यह समय भारत में अंग्रेजों की गुलामी का समय था।
- लेखकों और सृजनकर्मियों पर अंगेजों की विशेष निगाह रहती थी।
- मुंशी प्रेमचंद की 'सोजेवतन' कहानी संग्रह को जब्त भी कर लिया गया था। इसका बड़ा कारण यही था कि इस संग्रह की कहानियों के पात्र स्वतंत्रता आंदोलन के लिए जनमानस का निर्माण करने की भूमिका निभा रहे थे।

मुंशी प्रेमचंद हिन्दी साहित्य में आधुनिक काल के एक अति महत्त्वपूर्ण साहित्यकार हैं। उन्होंने कहानी, उपन्यास, निबंध एवं आलोचना में बेहतरीन साहित्य की रचना की है।

लगभग 300 कहानियां लिखी। जो मानसरोवर के 8 भागों में संकलित हैं।

बड़े घर की बेटी, नमक का दरोगा, सत्याग्रह, कफन, शतरंज के खिलाड़ी, पंच परमेश्वर, बूढ़ी काकी, नशा, सवा सेर गेहूं, पूस की रात इनकी सुप्रसिद्ध कहानियां हैं।

प्रेमचंद को 'कथा सम्राट' और 'उपन्यास सम्राट' भी कहा जाता है।

मुंशी प्रेमचंद के मुख्य उपन्यास निम्न प्रकार हैं –

कर्मभूमि, निर्मला, गबन, गोदान, रंगभूमि, प्रतिज्ञा, प्रेमा, प्रेमाश्रम, सेवासदन, कायाकल्प

'मंगलसूत्र' अधूरा उपन्यास, 'दुर्गादास' एक बालोपयोगी उपन्यास

प्रेमचंद ने तीन नाटक भी लिखे

- **प्रेम ही वेदी**
- **संग्राम**
- **कर्बला**

- ‘कर्बला’ एक ऐतिहासिक–धार्मिक नाटक है। जो 1924 में लिखा गया था।
- भारत के तेज होते स्वतंत्रता संग्राम में मुंशी प्रेमचंद भारतीय समाज में हिन्दू और मुस्लिम वैमनस्य से बेहद चिंतित थे।
- वे सोचते थे कि राजनीतिक आजादी तभी मिल सकती है यदि हिन्दू और मुसलमान दोनों मिलकर अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई लड़ें तो।

युग निर्धारण

- नाटक के विकास-क्रम की दृष्टि से मुंशी प्रेमचंद प्रसाद युग के अंतर्गत आते हैं। प्रसाद युग का समय 1920-36 तक माना जाता है।
- प्रसाद युग में हरिकृष्ण प्रेमी, अंबिकादत्त त्रिपाठी, रामचरित उपाध्याय, रामनेरेश त्रिपाठी, गंगा प्रसाद अरोड़ा, वियोगी हरि, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' गणेश दत्त इंद्र, भंवरलाल सोनी, चंद्रराज भंडारी, ज्ञानचंद्र शास्त्री, जिनेश्वर प्रसाद भायल, उदयशंकर भट्ट आदि
- युग की परिस्थितियों के अनुरूप इस काल में ऐतिहासिक और पौराणिक नाटक रचे गए। इस काल में सामाजिक समस्याओं पर भी नाटकों की रचना हुई।
- हिन्दू-मुसलमान वैमनस्य को लेकर इस समय के तमाम लेखक चिंतित थे।

मुंशी प्रेमचंद का मानना है कि सभी धर्मों की बुनियाद त्याग, समर्पण, और कर्त्तव्यनिष्ठा पर खड़ी है। सभी को परस्पर धर्मों का सम्मान करते हुए आजादी की लड़ाई को बरकरार रखें। एक दूसरे के बारे में जानना ही एक दूसरे के समीप आने में मदद कर सकता है।

उन्होंने 'कर्बला' नाटक की भूमिका में प्रारंभ में लिखा भी है –

प्रायः सभी जातियों के इतिहास में कुछ ऐसी महत्वपूर्ण घटनाएँ होती हैं, जो साहित्यिक कल्पना को अनंत काल तक उत्तेजित करती रहती हैं। साहित्यिक-समाज नित नये रूप में उनका उल्लेख किया करता है, छंदों में, गीतों में, निबंधों में, लोकोक्तियों में, व्याख्यानों में बारंबार उनकी आवृत्ति होती रहती है, फिर भी नये लेखकों के लिए गुंजाइश रहती है। हिन्दू-इतिहास में रामायण और महाभारत की कथाएँ ऐसी ही घटनाएँ हैं। मुसलमानों के इतिहास में कर्बला के संग्राम को भी वही स्थान प्राप्त है। उर्दू और फ़ारसी के

‘कर्बला’ नाटक का स्पष्ट उद्देश्य प्रेमचंद की इन पंक्तियों में झलकता है

कितने खेद और लज्जा की बात है कि कई शताब्दियों से मुसलमानों के साथ रहने पर भी अभी तक हम लोग प्रायः उनके इतिहास से अनभिज्ञ हैं। हिन्दू-मुसलिम वैमनस्य का एक कारण यह भी है कि हम हिंदुओं को मुसलिम महापुरुषों के सच्चरित्रों का ज्ञान नहीं। जहाँ किसी मुसलमान बादशाह का ज़िक्र आया कि हमारे सामने औरंगज़ेब की तसवीर खिंच गयी। लेकिन अच्छे और बुरे चरित्र सभी समाजों में सदैव होते आये हैं, और होते रहेंगे। मुसलमानों में भी बड़े-बड़े दानी, बड़े-बड़े धर्मात्मा और बड़े-बड़े न्यायप्रिय बादशाह हुए हैं। किसी जाति के महान् पुरुषों के चरित्रों का अध्ययन उस जाति के साथ आत्मीयता के सम्बन्ध का प्रवर्तक होता है, इसमें सन्देह नहीं।

मुंशी प्रेमचंद के उपर्यक्त कथन के अनुसार कर्बला नाटक के निम्न उद्देश्य हैं –

- यज़ीद के रूप में अंग्रेजी शासन-व्यवस्था को इंगित करना
- सांप्रदायिक सद्भाव पैदा करना
- मुस्लिम धर्म में त्याग एवं शहादत की उच्चाशयता से परिचित करवाना
- राजसत्ता (यज़ीद) की क्रूरता से परिचित करवाना
- मुस्लिम महिलाओं में त्याग, समर्पण एवं कर्त्तव्यनिष्ठा की भावना का दिग्दर्शन कराना
- कर्त्तव्यपरायणता

यज़ीद के रूप में अंग्रेजी शासन-व्यवस्था को इंगित करना

- मुंशी प्रेमचंद ने यज़ीद के रूप में अंग्रेजी शासन-व्यवस्था को इंगित किया है। वे यज़ीद की सत्ता की भूख को अंग्रेजों की प्रवृति से मिलान कर रहे थे।
- राजसत्ता पूरी तरह से निर्दयी, भावनाशून्य ओर निरंकुश होती है।
- राजसत्ता के लिए धार्मिक आचरण कोई माययने नहीं रखता। राज का धर्म ही एक अलग रूप में इस नाटक में व्याख्यायित हुआ है
- राजसत्ता अपने मार्ग में आने वाले वयवधानों को समूल नष्ट करने में विश्वास रखती है।
- धर्म की बढ़ती ताकत उसे भयभीत करती है।
- राजसत्ता का चरित्र धमसत्ता से बिल्कुल भिन्न है और उलट है।

सांप्रदायिक सद्भाव पैदा करना

- हिन्दू-मुस्लिम सौहार्द विकसित करना समय की मांग थी।
  - अंग्रेज भारतीय समाज में व्याप्त विभिन्नताओं के आधार पर फूट डालो और राज करो की नीति पर चलते हुए हिन्दू और मुसलमानों को आपस में लड़ा रहे थे।
    - मुंशी प्रेमचंद एक युगद्रष्टा साहित्यकार थे।
      - वे हिन्दुओं को त्यागी, समर्पित, कर्त्तव्यपरायणता और सेवाभावना से परिपूर्ण मुस्लिम चरित्रों से परिचित कराना चाहते थे।
        - मुस्लिम धर्म में भी हिन्दू, बौद्ध, सिक्ख, जैन और ईसाई धर्म के समान की त्याग और बलिदान की गाथाएं भरी पड़ी हैं, जिनसे मुसलमानों का व्यवहार संचालित होता है।
      - सभी धर्मों को परस्पर जानना ही सांप्रदायिक समस्या का समाधान है।
    - इमाम हुसैन की धार्मिक उच्चाशयता से प्रभावित होकर हिन्दुओं ने भी इस युद्ध में उनका साथ दिया और साहसराय व उनके छह भाई भी मारे गए।
- प्रेमचंद हिन्दुओं द्वारा इमाम हुसैन की सहायता करना इस नाटक के रचनाकाल 1924 में विशेष महत्त्व रखता है।

मुस्लिम धर्म में त्याग एवं शहादत की उच्चाशयता से परिचित करवाना

- कर्बला ईराक के दक्षिण मध्य में बसा एक शहर है।
  - 10 अक्तूबर, 680 को इस वीभत्स युद्ध का अंतिम दिन था, जिसमें इमाम हुसैन की दर्दनाक हत्या की गई
    - इमाम हुसैन पैगंबर मुहम्मद का नवासे थे और धार्मिक लोगों में उनका अपार सम्मान था।
      - कूफा के लोगों ने इमाम हुसैन को यज़ीद की क्रूरता से उनका बचाव करने के लिए बुलाया था।
    - परंतु जब हुसैन कूफा पहुंचा तो यज़ीद के खौफ से कूफा के नागरिकों ने उसकी सहायता ओर साथ देने से मना कर दिया
  - फलस्वरूप अपने वचन को निभाता हुआ वह, उसका परिवार और उसके सिपाही सभी शहीद हो गए।
- इमाम हुसैन को प्रारंभ में ही आभास हो गया था कि उनकी मृत्यु निकट ही है। फिर भी वे अपने कर्त्तव्य पर अड़े रहे

राजसत्ता (यज़ीद) की क्रूरता से परिचित करवाना

- यज़ीद इस नाटक में विशुद्ध राजनीतिक कूटनीतिक व्यक्ति के रूप में आया है। यह कूटनीति उसको पिता मुआबिया से मिली थी। मुआबिया और यज़ीद की कहानी हिन्दुओं के धार्मिक ग्रंथ महाभारत से बिल्कुल मिलती जुलती है।
  - इमाम हुसैन को वह केवल इसलिए मरवाना चाहता है कि भविष्य में कहीं वह उसके मार्ग का रोड़ा ना बन जाए। लोगों में उसके प्रति धार्मिक भावना कहीं राजनीतिक प्रबलता का रूप ग्रहण ना कर ले।
    - इमाम हुसैन के खेमे के 72 लोगों को वह 22 हजार सैनिकों की सेना से कुचल डालता है।
      - इन 72 लोगों में महिलाएं, बच्चे और वृद्ध भी थे।
        - यज़ीद की क्रूरता उस समय अपने भयानक रूप में दिखाई देती है जब वह फ़रात नदी से हुसैन के खेमे वालों को पानी लेने पर भी प्रतिबंध लगा देता है। और इसके लिए वह बाकायदा सेना की टुकड़ी बिठा देता है।
- इमाम हुसैन के खेमे के बालक, वृद्ध और सैनिक प्यास से ही मरने लग जाते हैं।

मुस्लिम महिलाओं में त्याग, समर्पण एवं कर्त्तव्यनिष्ठा की भावना का दिग्दर्शन कराना

- यह नाटक मुस्लिम महिलाओं के त्याग और बलिदान की कहानी भी कहता है।
  - तौआ इमाम हुसैन के चचेरे भाई मुसलिम को पनाह देती है। जबकि उसे पता है कि यज़ीद कितना क्रूर है। उसके लिए लोगों को मारना खेल जैसा है।
    - वहब की मां क़मर अपने पुत्र के शीद होने पर कहती है, 'मेरे सपूत बेटे, मुबारक है यह घड़ी कि मैं तुझे अपनी आंखों से हक पर शहीद होते देख रही हूं।'
- इमाम हुसैन की बहन जैनब, पत्नी शहरबानो और पुत्री सकीना बहुत ही साहसी महिलाओं के रूप में इस नाटक में आई हैं। वे इमाम हुसैन का अंतिम दिन तक उनका साथ नहीं छोड़तीं।

कर्त्तव्यपरायणता

- 1924 में भारत अंग्रेजों का गुलाम था। भारतवासियों के मन में कर्बला जैसे नाटक लिखकर इमाम हुसैन जैसी कर्त्तव्य भावना पैदा करना उस समय जरूरी था।
- कूफा के अनेक लोग, जो उस समय इमाम हुसैन के साथ दगा कर रहे थे, 1924 में भारत में भी ऐसे लोगों की कमी नहीं थी जो अंग्रेजों के इनामों और उन द्वारा दी गई पदवियों पर फूले नहीं समाते थे। वास्तव में वे ही भारत की आजादी के दुश्मन थे।
- कूफा के लोगों द्वारा असहयोग करने के बावजूद इमाम हुसैन अपने कर्त्तव्य पर अडिग रहे।
- इमाम हुसैन के साथ जुड़े हुए तमाम सगे संबंधी भी पूरी कर्त्तव्य भावना के साथ लड़े और अंत में काम आए।
- यह नाटक स्वयं को मिटाकर अपना कर्त्तव्य पालन करने का संदेश देता है।

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं -

- मुंशी प्रेमचंद हिन्दी के मूर्धन्य साहित्यकारों में परिगणित किए जाते हैं।
- 'कर्बला' उनका मुस्लिम इतिहास को लेकर लिखा गया एक अति महत्त्वपूर्ण नाटक है।
- 'कर्बला' नाटक में उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम धर्मों में त्याग, समर्पण और शहादत की भावना को इन धर्मों का मूल तत्त्व माना है।
- कर्बला नाटक समय की मांग थी। तेज होते आजादी के आंदोलन में धर्म, जाति, संप्रदाय, क्षेत्र और भाषा सभी विरोधाभासों को भूलकर भारतीयों को अंग्रेजों के साथ लड़ाई लड़नी थी।
- एक दूसरे की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कारिक परंपरा से जुड़कर ही एक दूसरे के निकट आया जा सकता है
- सत्ता क्रूर होती है। वहां भावनाओं, सहानुभूति और सदाचार की कोई आवश्यकता नहीं होती।

धन्यवाद